ISSN : 2583-2948

संपादकीय

नूतनवर्ष का आगमन प्रत्येक मन को हर्षित, उल्लासित और रोमांचित करता है, नयी उम्मीदों और उत्साह का संचार करता है। जा रहे वर्ष के कटु अनुभवों को पीछे छोड़कर नए लक्ष्यों के निर्धारण हेतु हम सब योजनाबद्ध होते हैं। नव वर्ष के साथ-साथ हम नए संकल्प लेते हैं, जो हमारे जीवन को और अधिक सकारात्मक और सफल बनाने में मदद करते हैं। यह समय आत्ममूल्यांकन और आत्मसुधार का भी होता है, जिससे हम अपने भविष्य को दिशा देने में सक्षम होते हैं। नए वर्ष का आरंभ जनवरी माह से होता है। यह माह मात्र नए वर्ष ही नहीं अपितु प्रवासी भारतीय दिवस, मकर संक्रांति, सफला एकादशी, लोहड़ी,युवा दिवस आदि के लिए भी जाना जाता है। प्रवासी भारतीय दिवस, जिसे प्रत्येक वर्ष 9 जनवरी को मनाया जाता है, भारत के प्रवासी समुदाय को सम्मानित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। यह दिन भारतीय विदेशों में बसे लोगों की योगदान को मान्यता देने और उनके साथ जुड़ने का प्रतीक है। यह दिवस भारत सरकार द्वारा प्रवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक योगदान को स्वीकार करने के लिए मनाया जाता है। प्रवासी भारतीयों ने न केवल भारतीय समाज को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ने में योगदान किया है, बल्कि उन्होंने विदेशों में भारत के नाम को भी गर्व से आगे बढ़ाया है। प्रवासी भारतीय दिवस भारतीयों के वैश्विक समुदाय के साथ एकजुटता और सम्मान की भावना को प्रकट करता है।

साहित्य, किसी भी समाज का आईना होता है। यह समाज की संस्कृति, परंपराओं और विचारों को संजोता और प्रस्तुत करता है। साहित्य ने हमेशा समाज की समस्याओं, खुशियों और संघर्षों को शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठकों को आत्ममूल्यांकन और आत्मसुधार की प्रेरणाएँ मिलती हैं। साहित्य की भूमिका केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में बदलाव लाने, जागरूकता फैलाने और विचारधारा को प्रगति की दिशा में मार्गदर्शन करने का भी कार्य करता है। साहित्यकार संवेदनशील होते हैं, जो समाज की सच्चाइयों को उजागर करते हैं और उसकी समस्याओं पर विचार करते हैं। प्रत्येक विधा में उनकी लेखनी चलती है।

नववर्ष, प्रवासी भारतीय दिवस और साहित्य, इन तीनों का आपस में गहरा संबंध है। नववर्ष में नए विचारों और संभावनाओं का आरंभ होता है, प्रवासी दिवस भारतीय प्रवासियों की उपलब्धियों और योगदानों को पहचानने का अवसर प्रदान करता है, और साहित्य इन दोनों पहलुओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। साहित्य के माध्यम से हम प्रवासी भारतीयों की संघर्ष गाथाओं और उनके योगदान को समझते हैं। इससे हम भी प्रेरित भी होते हैं कि हम अपने समाज और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाने के लिए और अधिक प्रयास करें।

'अनुकर्ष' पत्रिका के प्रत्येक पाठकों को नववर्ष और प्रवासी भारतीय दिवस की शुभकामनाओं के साथ प्रवासी साहित्य और भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को भी समझने और आत्मसात करने का आग्रह करती हूँ। प्रवासी भारतीय साहित्य न केवल मनोरंजन और ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि यह हमें उस देश के समाज और संस्कृति से जुड़ने का अवसर भी देता है। प्रवासी भारतीयों की संघर्ष गाथाएँ और उनके योगदान हमें यह सिखाते हैं कि दुनिया में कहीं भी जाएं, हमें अपने मूल स्थान और संस्कृति से जुड़े रहना चाहिए। साहित्य, प्रवासी भारतीय दिवस और नववर्ष के इन तीनों पहलुओं को आत्मसात कर हम समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं और अपनी पहचान को मजबूती से वैश्विक धरातल पर प्रस्तुत कर सकते हैं।

अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी